International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue2; March2017; Page No. 86-89

मृणाल पाण्डे का पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान

डॉ. महेन्द्र सिंह

प्रवक्ता हिन्दी विभाग, सम्राट् पृथ्वीराज चौहान, पी.जी, कॉलेज, रोहालकी किशनपुर, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

प्रस्तावना

मृणाल पाण्डे का जन्म 26 फरवरी 1946 को टीकमगढ़ मध्यप्रदेश में हुआ था। मृणाल जी का साहित्य के साथ –साथ पत्रकारिता क्षेत्र में भी सराहनीय कार्य रहा है। इन्होंने स्टार न्यूज, दूरदर्शन चैनल पर हिन्दी बुलेटीन का सम्पादन कार्य किया। मृणाल जी प्रसार भारती के चेयरमैन पद, दैनिक हिन्दुस्तान की कार्यकारी सम्पादक तथा साप्ताहिक हिन्दुस्तान के सम्पादक पद पर भी रह चुकी हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने वामा, नन्दन एवं कादम्बिनी आदि पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य भी अपनी कार्य कौशलता से किया है। इनका पत्रकारिता के क्षेत्र में जन कल्याण का कार्य उच्च कोटि का रहा है।

पत्रकारिता चेतना का वह प्रकाश है जो सत्य को प्रतिष्ठित करता है। पत्रकारिता के माध्यम से पाठक समाज और राष्ट्र के जीवन की रोज की गतिविधियों को जानता है। पत्रकार जन जीवन की आज की जरूरतों पर अधिक देखता है, अधिक सोचता है उसके लिए जन–जन की इच्छा महत्वपूर्ण है। वह अपनी बात नहीं कहेगा, वह जो लिख–बोल नहीं सकते उनके विचारों को, उनकी आवश्यकताओं को अधिक व्यक्त करता है और जन–जन की आवाज बनता है। मृणाल जी आधुनिक युग की पत्रकार हैं वे बहुत सोच विचार कर बात को स्पष्ट शब्दों में समझाने का प्रयत्न करती हैं–'' सूचना प्रसार क्रान्ति के इस युग में आज एक औसत भारतीय नागरिक को देश के ताजा इतिहास और सरकार कीकार्य पद्धति और सोच की जितनी जानकारीहै उतनी शायद पहले कभी नहीं थी और अक्सर ऐसी जानकारी को ज्ञान का पर्याय मान लिया जाता है, शायद इसीलिए इन दिनों नागरिक –पत्रकार या सीटिजन–जर्नलिस्ट नामक एक नया संकरित मावन हमारे मीडिया में तेजी से उस जगह को घेरने लगा है, जो कभी पत्रकारों को बरसों की जद्दोजहद और साधना से मिलती थी। एक स्तर पर यहां स्थिति भले ही लोकतांत्रिक प्रणाली का सहज और ताजा फल दिखाई दे वहीं यह मीडिया में एक तटस्थ ऐतिहासिक नजरिए और कठोर धंधई अनुशासन को कम कर रही है।''[1] आज सूचना प्रौद्योगिकी ने पत्रकारिता को नये आयाम दिये हैं।

मृणाल जी ने जब अपने पत्रकारिता जीवन की शुरूआत की तो उनकी माता जी व चाचा जी ने उनको समझाया कि यह काम इतना आसान नहीं है लेकिन मृणाल जी के इरादे बुलन्द थे किसी की प्रवाह किये बिना उन्होंने अपने कदम आगे बढ़ायें और काम मिलने की सूचना माता जी को दी–'' हां पार्वती ने कहा काम तो बढ़िया लगता है फिर थोड़ा रूककर लेकिन तुझे बड़ी देर –देर तक काम करना होगा? पोलिटिकल प्रेशर होंगे? थानों और दंगाग्रस्त इलाकों के चक्कर लगाने होंगे?''

''उससे क्या होगा''

क्या तु यह सब झेल सकेगी? क्या तु यह सब करना चाहती है? राजनेताओं की संगति में ज्यादा दिखने वाली औरतों को मर्द आदर के साथ नहीं देखते।

''आदर–वादर नहीं सालों को अपनी मर्दानगी को खतरा लगता है।''[2]

मृणाल जी ने देखा कि जो दिखाई देता है वही सत्य नहीं है, सत्य कुछ और ही शक्ल लिये होता है–'' सत्य पर लगा है सोने का ढक्कन।''[3] सच को अधिकांश दबा दिया जाता है। उन्होंने मीडिया के अन्दरूनी बदलते स्वरूप को बारीकी से देखा है–'' लगभगबेमतलब विषयों के रिपोर्टर से बढ़ते–बढ़ते एक राष्ट्रीय दैनिक की पहली महिला सम्पादक देश के सबसे लोकप्रिय टी.वी चैनलों में से एक की न्यूज एंकर बनने तक वह मीडिया के बदलते स्वरूपको बहुत पास से देखती है।''[4] ''वह देखती है राजनीतिक और आर्थिक फायदों की लड़ाई मीडिया के सहारे कैसे लड़ी जाती है और इन अधिकांश मामलों में सच्चाई ही बलि चढ़ती है।''[5] बड़े–बड़े नेताओं व उद्योगपतियों का मीडिया पर प्रभाव है। वे सच्चाई की खोज में निरन्तर अपने कदम आगे बढ़ाती रही हैं और सच को दबाने की बजाए सामने लाने की कोशिश करती रही हैं।

मृणाल जी ने अपने पत्रकारिता क्षेत्र में अनेक रहस्यों से पर्दा उठाने के साथ –साथ समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है। वे समाज को प्रभावित करने वाले सभी पहलुओं पर अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त करती रही हैं–'' आप गौर करें तो पाएंगे कि पिछले दस वर्षों में पत्र– पत्रिकाओं में स्त्री से जुड़ी जिन घटनाओं की चर्चा हुई है वे सभी प्रायः हिंसा, बलात्कार, जिन्दा जलाए जाने या फिर जघन्य अपराधों से सीधे जुडी हुई थी। स्त्री और कन्या मृत्यु दर में बढ़ोतरी, स्त्री मजदूरों को सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा पुरूषों से लगातार कम वेतन भुगतान किए जाने की वारदातें, ईंट भट्टों, निर्माण कार्यों में आदिवासी स्त्रियों का शोषण, निचले तबकों की कामकाजीऔरतों, खेती मजूरिनों, भंगिनों, रद्दी बीनने वालियों उनसे कुछ ऊपर निम्न मध्यमवर्ग की पढ़ी–लिखी कामकाजी औरतों , जैसे–नर्सों, टेलीफोन औपरेटरों, स्टेनोग्राफरों के खुले यौन–उत्पीड़न इन मुद्दों पर गम्भीर सुविचारित सामग्री और सम्पादकीय कितने लिखे गए।''[6] ऐसे विषयों पर समाज के बड़े तबकों का ध्यान जाता ही नहीं है और हमारा बुद्धिजीवी वर्ग भी इसे अनदेखा करता रहा है।

अपने देश की शिक्षा नीति पर भी मृणाल जी ने चिन्ता व्यक्त की है–'' यदि हमारी शिक्षा नीति सही थी तो लड़कियों के स्कूलों की बढ़ती के बावजूद अपेक्षित विकास क्यों नहीं हुआ? शिक्षित मध्य वर्ग में एक ओर क्यों दहेज हत्या, युवा स्त्रियों द्वारा आत्महत्या, बलात्कार और स्त्रियों के प्रति गम्भीर हिंसात्मक वारदातों में इजाफा हुआ है? दूसरी ओर कन्या शिशुओं और स्त्रियों की मृत्युदर क्यों नहीं घटी? इसके साथ ही बुनियादी शिक्षा अधूरी छोड़ने वाली लड़कियों का प्रतिशत अभी भी इतना ऊँचा क्यों है।''[7] इस शिक्षा नीति में काफी सुधार की आवश्यकता है। शिक्षा द्वारा ही उत्तम राष्ट्र का निर्माण सम्भव हो सकता है। एड्स जैसे खतरनाक रोग पर मृणाल जी ने जो आंकड़े अपनी रिपोर्ट में प्रस्तुत किए उसने सबको चकित कर दिया–'' भारत के महानगरों में हिजड़े कनॉट प्लेस(अब राजीव चौक) में लगभग 50 हिजड़े धंधा करते हैं और

बड़ी तेजी से एड्स के विषाणु फैला रहे हैं । केवल दिल्ली में ही एक हिजड़ा प्रतिदिन दस व्यक्तियों को एड्स के विषाणु दे रहा है। दिल्ली में इस समय 15000 हिजड़े हैं। इन आंकडों ने एड्स के क्षेत्र में काम कर रहे विशेषज्ञों को परेशानी में डाल दिया है, पूरे देश में हिजड़ों का 60 प्रतिशत तेजी से यह विषाणु फैला रहा है।''[8] यह एक सोचनीय विषय बना हुआ है जिस पर समय रहते ध्यान न दिया गया तो इसके गम्भीर परिणाम हो सकते हैं।

आज समाज के अन्दर पुरूषों का बोलबाला है, महिलाओं की कहीं पर कोई सुनवाई नहीं है तथा समाज के अन्दर महिलाओंपर अपराधों में वृद्धि हुई है जिस पर मृणाल जी ने चिन्ता व्यक्त की है–''हरियाणा राज्य के कई खाप पंचायतों के महिला विरोधी फतवों और लड़कियों के लगातार घटते अनुपात पुरूष/महिला (1000/762) के चलते लोग बाग अपने घरों में बेटी का जन्म नहीं चाहते। यही नहीं अब एक पूर्व मुख्यमंत्री जी की ताजा सलाह है कि इज्जतदार लोगों को अपनी लड़कियों को रेप केस से बचाना है तो वे खाप पंचायतों की सलाह मानें और इनको जल्द से जल्द ब्याह दें। अचरज क्या कि इस मानसिकता वाले नेताओं के राज्य में दलित लड़की के साथ गैंगरेप होने के बाद जब उसे कोई न्याय नहीं मिला तो वह जलमरी। महिलायें चिल्लाती रहें उनकी कौन सुनता है, उल्टे थानों से लेकर पड़ोसी तक उनको और अधिक भोक्या मान लेते हैं। जब थानों में दर्ज किये जाने से लेकर अदालत में बलात्कारी को दण्ड मिलना न मिलना अक्सर इस बात पर निर्भर है कि बलात्कारी पीड़िता दलित थी कि सवर्ण? उत्पीड़न उसकी जाति के लोगों ने किया था कि दूसरी जाति समुदाय वालों ने! उस बलात्कार का आरोपी कोई जाना–माना व्यक्ति है या सड़क छाप चरसी? ऐसे में देश के कानून के तहत आप बलात्कार के लिए मृत्युदण्ड का भी प्रावधान करा दें वह कागज पर ही रह जायेगा और बलात्कारी फिर भी दण्ड का सहजभागी नहीं माना जायेगा। समरथ को नहीं दोष गुसाईं।''[9] बनारस में चलने वाले रेशम कारखानों से जो बात सामने आई उससे सभी अनभिज्ञ थे–''एक पत्रकार की भेंट बनारस के प्रसिद्ध रेशम बुनकर उद्योग के कारीगरों से हुई तो यह चौकाने वाला तथ्य सामने आया कि कुछ बुनकर अपनी ढरकी पर पॉलिश करने के लिए चिकनाईयुक्त कंडोम इस्तेमाल कर रहे हैं। ताकि धागा कमजोर होने की स्थिति में भी चिकनी ढरकी द्वारा रेशमी साड़ी की बुनाई तेज गति से की जा सके। अनुभवी बुनकरों के अनुसार सरकारी अस्पतालों में कंडोम मुफ्त मिलता है और इस तरह इसकी आपूर्ति में कोई बाधा नहीं होती। उन्होंने रिपोर्टर को यहां तक बताया कि एक रेशमी साड़ी को बनाने में 14 कंडोम लगते हैं।''[10]

पश्चिम बंगाल के दौरे पर मृणाल जी की मुलाकात वेश्यावृत्ति का धंधा करने वाली कुछ महिलाओं से हुई तो चौकाने वाली बातें सामने आई–'' हम लोगों की उम्र ढलती जा रही है और ''फ्लाइंग स्कवायड'' से भी कड़ी प्रतिस्पर्धा मिलती है। फ्लाइंग स्कवायड? क्या पुलिस के बारे में कह रही हो?

''नहीं–नहीं'' महिलाएं मेरी अज्ञानता पर हँसी, पुलिस तो खुद हमारी ग्राहक है। दरअसल ये तो घरेलू बीवियां और कॉलेज की लडकियां हैं। पति और पिता दफ्तर में हो तो ये जल्दी–जल्दी पैसा बनाने के फिराक में निकल पड़ती हैं। ये लोग दस बजे सुबह निकलती हैं जब हम ग्राहकों को निपटाकर आराम कर रहे होते हैं। साँझ होते–होते हमारे लिए बहुत कम ग्राहक बचते हैं। यह भी सच है कि गाँठ के पूरे ग्राहक इन शिक्षित और सजी–सँवरी बेदाग औरतों को पसन्द करते हैं।''[11] कई पिछड़े और आदिवासी इलाकों से महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल हुई –''विवाहपूर्व और विवाहेत्तर सम्बन्ध तथा यौन –दुर्व्यवहार भी गाँवों में खूब होता है। एक बारह वर्षीया बच्ची को उसका पिता ''मासूम'' की क्लिनिक में गर्भपात के लिए ले आया था। पता चला कि उसने ही यह कुकर्म किया था। जब डॉक्टर ने उससे इसके बारे में जवाब तलब किया तो पिता का जवाब था, जब पेड़ मैंने लगाया है तो पहला फल भी मैं ही चखूंगा।''[12]

मृणाल जी ने देश के शिक्षा संस्थानों पर भी अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त की हैं जो शिक्षा नीति की पोल खोलती हैं–'' हम लोग विदेशों में काम कर रहे भारतीयों की उजली सफलता का ग्राफदेखकर यह खुशफहमी पाल बैठते हैं कि हमारे नेता, बाबू, भ्रष्ट हों तो हों। हमारी उच्च शिक्षा संस्थान आज भी दुनियां की बेहतरीन शिक्षा संस्थानों से टक्कर लेने में सक्षम हैं। पर कड़वी सच्चाई यह है कि हमारे यहां कथा कथित साक्षरता दर भले ही बढ़ रही हो, लेकिन शिक्षा का कुल स्तर दिनोदिन घट रहा है। खूब मोटी तकड़ी फीस वसूलने वाली अधिकतर निजी शिक्षण संस्थाएं भी छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने में अक्षम साबित हुई हैं। नतीजतन देश भर में शिक्षित और कुंठित बेरोजगारों की तादाद बढ़ रही है। दूसरी तरफ उन्नत उपक्रमों और उन्नत तकनीकी तथा प्रबंधन संस्थानों के लोग रो रहे हैं कि संस्थान या उपक्रम बिठा भी लिए तो उनके लिए अच्छे शिक्षक, प्रशिक्षित कामगार और प्रबंधक कहां से आएं।''[13] शिक्षा नीति में काफी सुधार की आवश्यकता है, जिससे अच्छे शिक्षक मिल सकें।

मृणाल जी ने भूमि अधिग्रहण कानून पर भी सवाल खड़े किए हैं। किसानों से आज उनकी जमीन सस्ती खरीदकर उसे मोटी रकम में बिल्डरों को बेचा जा रहा है–''राजमार्ग निमार्ण सरीखे सार्वजनिक विकास कार्यों के लिए सरकार जमीन अधिग्रहण कर रही है, वैसे–वैसे किसानों – आदिवासियों और सरकार के बीच टकराव बढ़ रहे हैं। ग्रामीणों के लिए अपनी जमीन बेचना तभी एक स्वीकाय विकल्प बनता है जब उसका मुआवजा इतना हो कि वे सपरिवार बिना खेती किये भी उम्र भर खाने–जीने लायक बन सकें। उनको शिकायत है कि उनसे तो सार्वजनिक विकास कार्यों के नाम पर जबरन कम दाम पर जमीन खरीदी जाती है और फिर सरकार उसे अपारदर्शी तरीके से किसी बड़े निर्माता ठेकेदार को लाखों के भाव में बेच देती है। वे उस पर आधारभूत ढांचे या राजमार्ग का निमार्ण करें, न करें, पहले उस पर पॉश रिहायशी भवन बनाकर उसे निजी ग्राहकों को करोड़ों में बेच खुद अरबपति बन रहे हैं।''[14] देश के अन्दर कई ऐसे आवंटन घोटाले होते रहे हैं लेकिन सरकार कुछ खास नहीं कर पाती है–''सरकार कुछ नहीं कर रही भूमि अधिग्रहण कानून की कमियों का दुरूप्रयोग करके भ्रष्ट एवं ताकतवर लोगोंको मजबूत बना रही है।''[15]

देश के अन्दर गरीबों एवं पिछड़ों का अपने बच्चों को पढ़ाना–लिखाना मुश्किल हो गया है ऐसी अनेक समस्याओं पर मृणाल जी समाज का ध्यान आकृष्ट करने की कोशिश करती रही हैं–'' तनिक और आगे सोचें, तो यह भी दिखने लगता है कि जिस परिमाण में निजी अस्पताल, स्कूल, क्रिकेट या टेनिस के निजी क्लब व कोचिंग संस्थान बन रहे हैं, उसी परिमाण में हमारे देश में शिक्षा या खेल सहित जनरूचि के तमाम क्षेत्रों के प्रशासन पर ऊँचे वर्गों की अन्यायपूर्ण जकड़बन्दी और पिछड़े वर्गों की नामालूम भागीदारी का सवाल दबता जा रहा है। जब अमीरों के बच्चें हर तरह की सुविधा से लैस अंगरेजी माध्यम के उम्दा स्कूलों में दाखिल होते हैं और गरीबों के बच्चे लगातार फटेहाल हो रहे सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की गैरहाजिरी में फाटक पर झूल–झूलकर नित नई गालियां सीखने और कक्षा से गायब होने की संभावनाओं से भरी एक अंधेरी गली में भेज दिये जाते हैं तो बचपन से ही बच्चे भेदभाव के साथ रहना सीखते हैं।''[16] पहाड़ी जीवन की अनेक समस्याओं का चिन्तन भी उनमें देखने को मिलता है, जिसकी उन्होंने हमेशा आवाज बनने की कोशिश की है–'' आज के पर्वतीय जीवन का वर्णन करने के लिए क्या यह जरूरी नहीं है कि उसे इतिहास के प्रभावों के संदर्भ में भी प्रस्तुत किया जाए? विद्यासागर जी पूछते हैं,

आज का आदमी आसमान से नहीं एक निश्चित इतिहास के गर्भ से जन्मा है। ऐसा किस शास्त्रमें लिखा है कि आजादी के बाद के हिन्दी कथाकार सिर्फ आजादी के बाद की ही कहानियां लिखेंगे? उनको पढ़कर हम देख पाते हैं कि पहाड़ में आज भी व्याप्त धार्मिक रूढ़िवाद, सवर्णो का सामंती आतंक और घर–घर परिवार की चक्की में पिसती पूरुषों से त्रस्त औरतें किस तरह से एक लम्बी शोषण परम्परा की उपज हैं, जो रू‍प बदलकर लोकतंत्र में भी प्रवेश कर चुकी हैं।''[17]

औद्योगिकरण तथा वैज्ञानिक तकनीक से विकास के साथ –साथ जो खतरा पैदा हो रहा है इस ओर किसी का ध्यान नहीं है–''पृथ्वी ही आकाश गंगा का ऐसा गृह है जहां जीवन है। लेकिन यहाँ विकास के नाम पर मनुष्य जो कुछ कर रहा है, उससे मानव जाति विनाश की ओर बढ़ती नजर आ रही है। हैरत और दुःख की बात तो यह है कि बार–बार दी जा रही चेतावनियों को भी वह अनसुना कर रहा है।''[18]

देश के अन्दर महिलाओं पर बढ़ रहे अत्याचार तथा उनकी अनदेखी पर भी उनकी नजर हमेशा रही है–'' भले ही भारतीय महिलाएं ब्रहमाण्ड सुन्दरी तथा विश्व सुन्दरी का खिताब जीतकर राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री से हाथ मिलाने लगी हों, लेकिन औसतन पूरेदेश में महिलाओं के खिलाफ अत्याचार बढ़े हैं तथा गरीबी और निरक्षरता की परिधि में आने वाली महिलाओं की तादात में भी अब तक कोई उल्लेखनीय गिरावट नहीं आई है। हमारे लोकतंत्र में आज महिला–वोटरों की तादाद लगभग आधी है, लेकिन वे लोकतांत्रिक प्रणाली में अपनी जमात की कोई सार्थक पहचान नहीं बना पाई है।''[19]

हमारे समाज में अभी काफी बदलाव की आवश्यकता है यदि समय रहते इसमे सुधार न हुआ तो हम बहुत पिछड़ जाएंगे–''अभी हमारा सक्षम सम्पन्न वर्ग अपने बच्चों को समाज से कटकर मात्र पैसा कमाने की जो शिक्षा देता है, वह भी उनके व्यक्तित्व का शोषण ही है। बर्नार्ड शॉ ने कहा था, पैसा बनाने का सिर्फ एक तरीका है कि सिर्फ पैसा बनाया जाए। हमारा अभिजात वर्ग इसी तर्क के बल पर जीता है। अपने बच्चों को हर जोखिम, हर चुनौती, हर अन्वेषण और शोध से कतराकर किसी उच्च तकनीकी मशीन याबढ़िया नस्ल के घोड़ों की तरह बंधे– बंधाए ट्रैक पर चलना सिखलाता है। उनकी तमाम प्रतियोगिताएं अपनी जैसी अन्य मशीनों या रेस के घोड़ों से होती हैं। प्रतियोगिता का क्षेत्र जब व्यापक और बहुकोणीय होगा तो हर आदमी को अपने लिए खुद उद्यम करना होगा। मां–बाप के संरक्षण में रहते हुए छिपकर वार नहीं कर पायेगा। तभी समाज में बच्चों का मोल नहीं मूल्य होगा।''[20] लोगों को अपनी सोच में बदलाव लाने की आवश्यकता है जिससे समाज आगेबढ़ेगा। आज घरों से लेकर उद्योगों तक में महिलाओं की खास पहचान नहीं है तथा उनका शोषण बरकरार है–''जीर्ण–शीर्ण घरों–झुग्गियों के भीतर बैठकर कताई, बुनाई, रंगाई, छपाई कुटाई– पिसाई अथवा पैकेजिंग जैसे– धंधों द्वारा बहुत नगण्य सी मजूरी पर ही संतोष करने को बाध्य हैं। एतदर्थ सरकारी बहियों में वे गृहिणी के खातों में डाल दी गयी हैं। कामगारों की कोटी में नहीं गिनी जाती।''[21]

आज समाज के अन्दर समझदार पेशे के लोगों द्वारा हडतालें करने पर जो नुकसान देश के अन्दर होता है, उस पर मृणाल जी चिंतित हैं। ''भूतपूर्व मुख्य न्यायमूर्ति वेंकटरमैया ने देश का ध्यान वकीलों द्वारा अक्सर की जाने वाली उन हड़तालों की ओर भी खींचा है जिनके कारण हजारों लोग अकारण तकलीफें उठाते हैं। चिकित्सा, वकालत, अध्यापन यह तीन ऐसे पेशे हैं, जिनके कार्यकर्ताओं की हड़तालों से लाखों बेकसूर नागरिक दुष्प्रभावित होते हैं। अतः डाक्टरों, वकीलों और अध्यपाकों द्वारा हड़ताल का मार्ग अपनाना अच्छी नागरिकता का लक्षण नहीं।''[22]

मृणाल जी ने अपनी यात्राके दौरान कई आदिवासी तथा ग्रामीण इलाकों का भ्रमण कर अनेक रहस्यों से पर्दा उठाया–''भूमिहीन दलित परिवार में पलने बढ़ने वाले गरीब बच्चों विशेषकर लड़कियों की पढ़ाई बहुत जल्द छूट जाती है और वे मजदूरी में जुट जाती हैं। सोलह वर्ष की उम्र तक आते–आते लड़कियों की शादी हो जाती है और अधिकांश जल्द ही गर्भवती हो जाती हैं। कुपोषण की मारी देह कठिन शारीरिकश्रम बार–बार गर्भधारण तथा प्रसव पूर्व और प्रसवोपरान्त देखभाल की कमी के कारण शिशु–मृत्यु दर ऊंची हो जाती है।''[23] उन्होंने देखा कि गांव में पुरूष शराब पीकर अपनी पत्नियों को पीटते हैं–'' गांव में समय और हिंसा में जरूर ही कोई रिश्ता है। सवेरे तो पुरूष अपनी पत्नियों के सामने साष्टांग दंडवत करते हैं और फिल्मी डायलॉग मारते हुए कसमें भी खाते हैं कि फिर कभी हाथ नहीं उठायेंगे, किन्तु रात में शराब पीने के बाद मुक्केबाजी का मुकाबला फिर शुरू हो जाता है।''[24]

आजकल बदलता परिवेश सिर्फ हमारी सभ्यता के लिए ही खतरा नहीं है हमारी रसोई तक भी पहुँच चुका है– ''सोचने की बात यह है कि कुछ खास वर्गों के लोगों के लिए बनाई गई चीजों की मांग उससे ज्यादा उससे निचले वर्ग में होती है, जैसे जब तुरत–फुरत और डिब्बाबन्द भोजन का बाजार गर्म हुआ तो पीजा, मैगी, मैकरोनी, चॉकलेट, बिस्कुट, चीज, पेय पदार्थ रईसों के खाने की चीज थी। जिनका मकसद न तो पेट भरना था, न ही नीयत। लेकिन धीरे–धीरे जब इन चीजों ने आम मध्यवर्गीय परिवारों की रसोई में हलचल मचानी शुरू की तो हींग–जीरे की छौंक की खुशबू ही गायब हो गई।''[25] मृणाल जी देश–विदेश की खबरों पर लगातार अपनीप्रतिक्रियाएं देती रही हैं जिससे लोगों का ध्यान उन खबरों पर भी जाये जो हमें प्रभावित कर रही हैं–'' एक लगभग अनाम फितूरी जुलियन असांजे द्वारा विवादास्पद तरीके से लीक किए गए विकिलीक्स के हैरतअंगेज राज को दुनिया बड़ी सुन और गुन रही है। अमेरिका के भीतर से रिसकर आ रही खबरें और असांजे सरीखे दुनिया के पोशीदा राजों को खोलने में सक्षम हैकर्स की धरपकड़ कहीं भयभीत और सतर्क भी कर रही है। कम्पयूटरी दुनियां के इस औधड़ नागा बाबा ने हैक करके (तहलका के स्टिंग, राडिया के टेप्स और शशी थरूर की टवीटस की ही तरह) विश्वव्यापी वेब पर कागजात डाल दिये हैं, उनसे जाहिर होता है कि सोवियत संघ की टूट के बाद से दुनियां में राजनीतिक और आर्थिक ताकतों का अकल्पनीय पुनर्वितरण हुआ और हो रहा है।''[26]

पहाड़ी राज्यों पर लगातार जो बारिश होती है उसके द्वारा हुए विनाश से मृणाल जी का मानवतावादी हृदय दुखी हो उठता है –'' उत्तराखण्ड को सतरह बरसों बाद भरपूर बारिश मिली लेकिन पिछले दशक में अवैज्ञानिक पर्यटन को उकसावा देने और कंकरीट के जंगल पनपने से प्राकृतिक आपदा के साथ दूसरे खतरे भी बढ़ गए हैं।''[27] मृणाल जी हमेशा ऐसे मुद्दों की आवाज बनी है जिन पर किसी का ध्यान आसानी से नहीं जाता।

मृणाल जी ने अपने पत्रकारिता क्षेत्र में कई रहस्यों से पर्दा उठाया है जो समाज को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते रहे हैं। दबे, कुचले, दलित समाज की विडम्बनाएं तथा शोषण, नारी–विमर्श, वर्णभेद आदि वर्जनाओं पर अपनी तीक्ष्ण प्रतिक्रियाएं व्यक्त की हैं। उन्होंने ग्रामीण परिवेश से लेकर महानगरों तक की संस्कृति और परम्पराओं से संचित समाज की विविधता का चित्रांकन करते हुए विभिन्न कुरीतियों से पर्दा हटाते हुए सामाजिक मूल्यहीनता पर प्रहार किया है। उनका कार्य समाज में व्याप्त भुखमरी, गरीबी, अंधविश्वास, शोषण, आत्महत्या, भ्रष्टाचार आदि की ओर दृष्टिपात करने के साथ ही प्राचीन परम्पराओं से विकासोन्मुख नवीन परम्पराओं की ओर अग्रसर है। उन्होंने समाज की ज्वलंत समस्याओं पर दृष्टिपात कर शोषित वर्ग की पीड़ा को स्वर देने का प्रयास किया है जो वर्तमान एवं भविष्य के लिए समाज का विचारणीय विषय है। उनका यह सामाजिक चिंतन उनकी दूरदर्शिता को दर्शाता है।

इनके स्वतंत्र लेख पत्र– पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रहे हैं जो हमारा लगातार मार्गदर्शन कर रहे हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में मृणाल पाण्डे जी का योगदान हमेशा सराहनीय रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मृणाल पाण्डे– कादम्बिनी मासिक वर्ष– 49 अंक 3, सितम्बर 2007, पृष्ठ –5
2. मृणाल पाण्डे– अपनी गवाही–राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 जगतपुरी, दिल्ली पृष्ठ– 19 पहला संस्करण –2003
3. मृणाल पाण्डे– रास्तों पर भटकते हुए–राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 जगतपुरी, दिल्ली पृष्ठ –35 पहला संस्करण–2000
4. मृणाल पाण्डे– अपनी गवाही–राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 जगतपुरी, दिल्ली पृष्ठ –आवरण पहला संस्कण–2003
5. वही –आवरण पृष्ठ
6. मृणाल पाण्डे– स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक (निबन्ध) –राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 दरियागंज, नई दिल्ली–पहला संस्करण–1987,दूसरा संस्करण–2002, तीसरा सं0–2011 पृष्ठ –48
7. वही – पृष्ठ 128
8. मृणाल पाण्डे– बन्द गलियों के विरूद्ध–राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली पृष्ठ–79 पहला संस्करण 2001 पहली आवृत्ति 2004
9. मृणाल पाण्डे– अमर–उजाला–देहरादून संस्करण 14 अक्टूबर 2012 पृष्ठ–16
10. मृणाल पाण्डे– ओ उब्बीरी–राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 दरियागंज, नई दिल्ली–पहला संस्करण –2003, पहली आवृत्ति 2006, पृष्ठ–28
11. वही– पृष्ठ 82
12. वही– पृष्ठ 125
13. मृणाल पाण्डे– अमर उजाला–देहरादून संस्करण 25 दिसम्बर 2011 पृष्ठ 16
14. मृणाल पाण्डे– अमर उजाला–देहरादून संस्करण 15 मई 2011
15. राजगोपाल पी.वी, (सामाजिक कार्यकर्ता) – अमर उजाला–देहरादून संस्करण 15 मई 2011
16. मृणाल पाण्डे– अमर उजाला–देहरादून संस्करण 27 मई 2012
17. वही – पृष्ठ 12 19 फरवरी 2012
18. मृणाल पाण्डे– बन्द गलियों के विरूद्ध – राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली पृष्ठ–260 पहला संस्करण –2001 पहली आवृत्ति 2004
19. मृणाल पाण्डे– परिधि पर स्त्री (निबन्ध)–राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0, दरियागंज, नई दिल्ली–पहला संस्करण –1996 पहली आवृत्ति 1998, पृष्ठ–24
20. मृणाल पाण्डे– बन्द गलियों के विरूद्ध–राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली पृष्ठ–195 पहला संस्करण –2001 पहली आवृत्ति 2004
21. मृणाल पाण्डे– परिधि पर स्त्री (निबन्ध)–राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0, दरियागंज, नई दिल्ली–पहला संस्करण –1996 तीसरी आवृत्ति –2011, पृष्ठ–20
22. वही –पृष्ठ 81
23. मृणाल पाण्डे– ओ उब्बीरी–राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 दरियागंज, नई दिल्ली–पहला संस्करण –2003 पहली आवृत्ति 2006, पृष्ठ–167
24. वही–पृष्ठ–171
25. बन्द गलियों के विरूद्ध–राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 , सुभाष मार्ग, नई दिल्ली पहला संस्करण –2001 पहली आवृत्ति 2004, पृष्ठ–140
26. मृणाल पाण्डे– अमर उजाला–देहरादून संस्करण 12 दिस. 2010
27. वही 3 अप्रैल 2011